

gebrauchend M. 4, 202. उपभुङ्क्तं यथा वासः R. 3, 37, 19. DAÇAK. in BENF. Chr. 189, 21. राष्ट्रम् so v. a. Abgaben im Reiche erheben Spr. 2931. धर्मवाणिज्यका ह्येते ये धर्ममुपभुङ्क्ते leben von MBu. 13, 7595. तपोपभुङ्गमानो पुरीम् so v. a. beherrscht Buāg. P. 4, 28, 4. Jmd benutzen: अहं च कुरुक्षेत्रं च यद्येष्टमुपभुङ्गताम् MBu. 1, 3392. प्रेयवत्पाण्डुपाञ्चालानुभोगेन्यामहे ततः 7, 8267. स्त्रीरत्नमुपभुङ्गताम् so v. a. der Liebe pflegen HARIV. 11262. KATHĀS. 17, 91. 32, 150. 132, 168. 43, 360. Spr. 3833. MĀRK. P. 70, 7. PĀÑKĀT. 43, 12 (33, 20 ed. orn.). MALLIN. zu RAGH. 19, 3. या (लक्ष्मीः) न वेश्येव सामान्या पथिकैरुपभुङ्गते Spr. 677. v. l. तथेयामुपभुङ्गतः (gen. partic.) MĀRK. P. 113, 21. तेनोपभुङ्गमानं शरीरम् (स्त्रियाः) KATHĀS. 38, 36. Es liegt nahe da, wo युञ्ज् mit उप die Bed. essen, verspeisen hat, eine Verwechslung mit भुञ्ज् anzunehmen, aber an den vielen Stellen, die WESTERGAARD anführt, liest die ed. Bomb. des MBu. nur 1, 6221 उपभोक्ष्यति st. उपयोक्ष्यति: vgl. u. भुञ्ज simpl. am Ende. — 2) den Lohn für Etwas (acc.) haben: मानसं मनसैवायमुपभुङ्क्ते प्रभाशुभम् । वाचा वाचा कृतं कर्म कायेनैव च कायिकम् ॥ M. 12, 8. स्वकृतं क्षुपमुष्यते R. 6, 98, 29. — 3) act. Jmd (acc.) zu Nutzen sein, dienen: उप वर्षं तं भुञ्जामो (= पालयामः ÇĀṆK.) ऽस्मिंश्च लेकि ऽमुष्मिंश्च KATHĀS. Up. 4, 11, 2. — Vgl. उपभुङ्गधन. उपभोक्तारं figg. — caus. zu geniessen geben: रसानुभोक्षयेत् Suçr. 2, 441, 11.

— प्रत्युप geniessen, verspeisen: गृहेषु वलिकर्माणि प्रेताः समुपभुङ्क्ते R. 6, 11, 39. — Vgl. प्रत्युपभोग.

— समुप geniessen so v. a. der Liebe pflegen mit (acc.): वश्यां कुमारौ वलतो ये न्ना समुपभुङ्क्ते MBu. 13, 2482. Verz. d. Oxf. H. 239, b, 26. — Vgl. समुपभोग.

— परि 1) Etwas (acc.) vorweg essen: परिच्छिष्टं च यदुक्तं परिभुङ्क्तं च यद्वेत् MBu. 13, 1579. — 2) Jmd (acc.) beim Essen übergehen, ohne Essen lassen: अपि स्त्रितर्पणमुद्रास्तं संभोज्यान्वृद्धालवान् Buāg. P. 4, 14, 43. — 3) verspeisen: शरीरं मे, वलमित्र परिभोक्तुं वायसास्तर्कयति MĀRK. 137, 11. geniessen, benutzen, gebrauchen: यदि मे स पुत्र इमं धनस्कन्धं परिभुञ्जीयात् SIDDH. P. 4, 11, a. अपरिभुक्त 10. b. सूरधूपरिभुक्तलतामृकः Kir. 3, 5. ÇĀṆK. 41, 17, 113. प्रियेण परिभुक्तमवेद्य गात्रम् R. 4, 16. प्रियत्रनपरिभुक्त (डुकूल) Sām. D. 43, 10. परिभुक्तामिव स्रगम् R. GORR. 2, 62, 24. निर्मल्यदाम परिभुक्तमनोत्तमधम् (so ist zu lesen) R. 4, 15. जोषां च परिभुक्तं च यातयामदि हयम् AK. 3, 4, 23, 147. — st. परिभुज्यन्तम् MBu. 11, 97 liest die ed. Bomb. परिभुज्जन्तम् (d. i. भुङ्ग्यन्तम्). Vgl. परिभोक्तारं fig. — desid. partic. परिभुज्जितं überaus hungrig MBu. 9, 1483. Kann auch in परि + वुञ् zerlegt werden.

— प्र 1. zu essen anfangen: प्रभुक्तं घ्रादनः P. 4, 2, 21, Sch. — 2) dienstfertig sein: आ या योषैव सूनुर्या याति प्रभुञ्जती RV. 1, 48, 5.

— प्रति geniessen: अस्यावकासस्य पलं प्रतिभोक्ष्य MBu. 9, 1863. — Vgl. प्रतिभोग.

— वि. partic. in भुक्तविभुक्त गया शाकापार्थिवादि aus SIDDH. K. zu P. 2, 1, 69.

— सम् 1) zusammen geniessen, geniessen: दध्यादनं संभुञ्जीयाताम् ÇĀṆK. Çr. 1, 17, 7. अपच्यैः सह संभुक्ते व्याधिरत्नरमे यथा DAÇ. 2, 57. संभोक्तुं विप्रयान् Spr. 1337. परिः संभुज्यते राज्यम् 1728. fleischlich geniessen: समभुज्यत ताभिः स यवेच्छम् RĀGA-TAR. 2, 106. सुगन्धादित्यम् — संभुभुजे 3, 283.

V. Theil.

संभुक्तभूरिवारा 6, 321. — 2) sich nützlich erweisen: सर्वान्यज्ञानंभुञ्जती bei allen Opfern dienend AV. 3, 10, 7. — Vgl. संभोग u. s. w. — caus. Jmd (acc.) speisen mit (instr.) JĀGĀ. 1, 105. Buāg. P. 9, 3, 18. अतिवीनदपानेन भूतानतवशनेन च । संभोज्य MBu. 3, 12672.

4. भुञ्ज (= 3. भुञ्ज 1) f. das Nutzenbringen, Zugutekommen, Frommen: Genuss, Vortheil, Nutzen (dat. zugleich als inf. zu betrachten): कुवे तु विष्टमा भुजे RV. 5, 73, 2. कस्तं उपो भुजे मतीं अमर्त्ये 1, 30, 20. भुजे मर्दिष्ठमभि विप्रमर्चत 31, 1, 127, 8, 11. नि मातरा नपति रेतसे भुजे seminis profectui (durch Attraction) 133, 3. इषे भुजे 8, 20, 8. 10, 48, 9. 5, 48, 11. येषां नाम तेषां शश्वतमिकमिदुजे 8, 20, 13. आ जामिर्तके अच्यत भुजे (von BENEFY auf भुञ्ज zurückgeführt) न पुत्र घोषयोः 9, 101, 14. इन्द्र दक्षं मधवन्त्रावदिदुजे 10, 100, 1. तासामेकामर्दधुर्मर्त्ये भुजम् 3, 2, 9. या इन्द्र भुजं घ्रातः स्वयं अमुरेभ्यः 8, 86, 1. मातरा भुजमा रीरियो नः 1, 104, 6. वस्वीत्र पुत्रां भुजेः 5, 74, 10. अग्रिमोक्ते भुजां पविष्ठम् 10, 20, 2. विद्याम् वासां भुजां धेनुनां न 22, 13. इन्द्रे भुजं शशमानासं अशत 92, 7. आत्मना भुजमभुताम् so v. a. möge er seines Lebens froh werden AV. 8, 2, 8. — 2) adj. am Ende eines comp. a) geniessend, essend II. 7. यज्ञशिष्टामृतं Buāg. 4, 31. शेषं M. 3, 117. आद्वं 250, 4, 109. कालपक्वं 6, 17. भैतं 11, 178, 253. विष्टभुजं 12, 56. पूवं 72. घृतं JĀGĀ. 3, 26. अनिदिष्टं HARIV. 11136. अमृष्टं R. 1, 6, 8. कुमिं Spr. 411. अयध्यं 1193. तृणाङ्कुरं 2460. पवनं 4723. अस्तु-कियशितं VARĀH. BRH. 8, 13, 27. मृष्टान्नमधुरं 16, 28. मोमं 43, 15, 47, 25. — VID. 247. KATHĀS. 33, 134. RĀGA-TAR. 4, 643. 6, 69. Buāg. P. 4, 7, 4. MĀRK. P. 14, 84. PĀÑKĀT. 102, 4. LA. (II) 87, 2. विविधाकारपानगेयादिभोगं geniessend KATHĀS. 44, 81. शमसौख्यं Spr. 1033. परदारं MĀRK. P. 14, 74. in Verbindung mit Wörtern, die Erde bedeuten, König, Fürst II. 4. काश्यपी RĀGA-TAR. 1, 45. Ausnahmsweise nicht mit seinem obj. componirt: न प्रकामभुजः अद्वे RAGH. 1, 66: vgl. अय्यं. — b) den Lohn für Etwas geniessend: कित्त्वियं MĀRK. P. 29, 30. — c) Nutzen bringend, frommend: विश्वं MAITRAJ. 3, 1, 6, 9. — d) durchlaufend, erfüllend: व्यक्तं (कालं) Buāg. P. 3, 11, 3. अविशेषं (कालं) 4. — Vgl. अय्यं. अय्यं. अय्यं, अमृतं, कणं, काण्डकं (Hit. 121, 16). क्रव्यं. नितिं. नितिलव्यं. नौणां. द्वां. जगती. तहं. देहं. धारां. पाणिं. पिशितं. पुरुं. पृथिवीं. पृथ्वीं. फणिं. वलिं. वहुं (auch Suçr. 2, 342, 5). भागं. भित्तां. भुजंगं. भू. भूमिं. भेकं. भैतं. मितं. यज्ञं. यज्ञाणं. लेपं. वेतनं. स्तनं. कृविर्भुज्. कृविष्यं.

भुञ्ज (von 1. भुञ्ज P. 7, 3, 61. 1) m. Arm. = वाहु AK. 2, 6, 2, 31. II. 589. an. 2, 74. MED. 6. 12. fig. HALĀ. 2, 367. = पाणि. कर P. 7, 3, 61. H. an. MED. भुजयोः सारमर्पय MBu. 1, 6029. दाशानां भुजयेन — तूर्णं पारमयाम्पात् 5875. न दैवादुनसंभ्रयात् 13, 334. Suçr. 1, 126, 2. 278, 2. भुजगदीधेयु भुजेषु KĀM. NĪTIS. 13, 59. भुजे भुजगेन्द्रसमानसारे भूयः स भूमेधुरमाससञ्ज RAGH. 2, 74. स्वभुजाद्वतारिता — धूर्तमनो गुर्वो 1, 34. भुजाच्छ्वरिपु 2, 23. भुजान्नितानां च दिगन्तसंपदाम् 3, 10. सुरहिपात्पालनवर्कशाङ्गुली भुजे 53. प्रियतमभुजालिङ्गन MEGH. 74. काण्डव्युतभुजलताग्रान्वि 93. ज्ञास्यमि कियदुजो मे रत्नति मौर्वीकिणाङ्क इति ÇĀṆK. 13. VID. 213. ज्ञाय Hit. 120. 6. भुजान्विपलानेनान्विधत्ता KATHĀS. 42, 79. उयुक्तभुजप्रताप DHĀRTAS. in LA. 67, 1. उत्तुनचक्षाया Spr. 4666. MEGH. 37. भुजयोरत्तरम् (vgl. भुजात्तरं so v. a. Brust Spr. 3327. भुजा f. AK. TRIK. 2, 6, 26. 3, 5, 18. MED. HALĀ. VARĀ. bei MALLIN. zu Çr. 7, 71. भुजालता Çr. 7, 71: vgl. भुजाक-